



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं० 34]

नई दिल्ली रविवार, फरवरी 17, 1980/माघ 28, 1901

No. 34]

NEW DELHI, SUNDAY, FEBRUARY 17, 1980/MAGHA 28, 1901

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि यह अलग संकलन के रूप में रख जा सके

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

गृह मंत्रालय

अधिसूचना

नई दिल्ली, 17 फरवरी, 1980

सां०कां०वि० 46(अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी की गई निम्नलिखित उद्घोषणा सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित की जा रही है :

प्रतः मेरा, भारत के राष्ट्रपति, नीलम संजीव रेड्डी, का समाधान हो गया है कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गयी है, जिसमें महाराष्ट्र राज्य का शासन भारत के संविधान (जिसे इसमें इसके पश्चात् "संविधान" कहा गया है) के उपबन्धों के अनुसार नहीं चलाया जा सकता है ;

प्रतः अब मैं, संविधान के अनुच्छेद 356 द्वारा प्रवृत्त शक्तियों का तथा उस निमित्त मुझे समर्थ बनाने वाली अन्य सभी शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्वारा उद्घोषणा करता हूँ कि मैं—

(क) उक्त राज्य की सरकार के सभी कृत्य और उस राज्य के राज्यपाल में निहित, तथा उनके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, भारत के राष्ट्रपति के रूप में स्वयं संभालता हूँ ;

(ख) घोषित करता हूँ कि उक्त राज्य के विधान मंडल की शक्तियाँ संसद् द्वारा या उसके प्राधिकार के अधीन प्रयोक्तव्य होंगी ; और

(ग) निम्नलिखित आनुवंशिक और पारिणामिक उपबन्ध करता हूँ जो इस उद्घोषणा के उद्देश्यों को प्रभावी बनाने के लिए मुझे आवश्यक या वांछनीय प्रतीत होते हैं ; अर्थात्—

(i) इस उद्घोषणा के उपर्युक्त खंड (क) के आधार पर मेरे द्वारा संभाले गए कृत्यों और शक्तियों का प्रयोग करने में, मेरे लिए भारत के राष्ट्रपति के रूप में उस सीमा तक जिस तक मैं ठीक समझूँ उक्त राज्य के राज्यपाल के आह्वय से कार्य करना विधिपूर्ण होगा ;

(ii) उक्त राज्य के संबंध में संविधान के निम्नलिखित उपबन्धों के प्रवर्तन को एतद्वारा निलम्बित किया जाता है, अर्थात्—

अनुच्छेद 3 के परन्तुक का उतना भाग जितने का संबंध राष्ट्रपति द्वारा राज्य के विधान मंडल को निवेश करने से है ;

अनुच्छेद 151 के खंड (2) का उतना भाग जितने का संबंध भारत के नियंत्रक और महालेखा-परीक्षक द्वारा राज्यपाल के समक्ष प्रस्तुत किए गए प्रतिवेदनों को राज्य के विधान मंडल के समक्ष रखे जाने से है ;

अनुच्छेद 163 और 164 ;

अनुच्छेद 166 का खंड (3) का उतना भाग जितने का संबंध सदस्यों के बीच राज्य सरकार के काम के ब्रायटन से है ;

अनुच्छेद 167 ;

अनुच्छेद 169 के खंड (1) का उतना भाग जितने का संबंध राज्य की विधान सभा द्वारा संकल्प को पारित करने से है ;

अनुच्छेद 174 का खंड (1) और खंड (2) का उप-खंड (क) ;

अनुच्छेद 175 से 178 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ;

अनुच्छेद 179 के खंड (ख) और (ग) और उस अनुच्छेद का प्रथम परन्तुक ;

अनुच्छेद 180, 181 और 182, अनुच्छेद 183 का खंड (ग) और उसका परन्तुक ;

अनुच्छेद 185 ;

अनुच्छेद 188 का उसका भाग जितने का संबंध विधान सभा के उपाध्यक्ष के बतनों और भत्तों से है ;

अनुच्छेद 188 का उसका भाग जितने का संबंध विधान सभा के सदस्यों से है ;

अनुच्छेद 189, 193 और 194 ;

अनुच्छेद 195 का उसका भाग जितने का संबंध विधान सभा के सदस्यों के बतनों और भत्तों से है ;

अनुच्छेद 196 से 198 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ;

अनुच्छेद 199 के खंड (3) और (4) ;

अनुच्छेद 202 के खंड (3) का उसका भाग जितने का संबंध विधान सभा के उपाध्यक्ष के बतनों और भत्तों से है ;

अनुच्छेद 208 से 211 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ;

अनुच्छेद 213 के खंड (1) का परन्तुक और खंड (3) का परन्तुक ; और

अनुच्छेद 323 के खंड (2) का उसका भाग जितने का संबंध आपन सहित रिपोर्ट के राज्य के विधान मंडल के सदस्यों से है ;

(iii) उक्त राज्य की विधान सभा एतद्वारा भंग की जाती है ;

(iv) संविधान में राज्यपाल के प्रति किसी निदेश का अर्थ उस राज्य के संबंध में राष्ट्रपति के प्रति निदेश लगाया जाएगा और उसमें राज्य के विधान मंडल या विधान सभा के प्रति किसी निदेश का, जहां तक उसका संबंध उनके कृत्यों और उनकी शक्तियों से है, अर्थ, अब तक कि संसद द्वारा अध्यादेश प्रेषित न हो, संसद के प्रति निदेश लगाया जाएगा और विधिप्रतया अनुच्छेद 213 में राज्यपाल और राज्य के विधान मंडल या उनके सदस्यों के प्रति निदेश का अर्थ क्रमशः राष्ट्रपति और संसद या उसके सदस्यों के प्रति निदेश लगाया जाएगा ;

परन्तु इसमें की कोई बात अनुच्छेद 153, अनुच्छेद 155 से लेकर अनुच्छेद 159 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) ; अनुच्छेद 299 और अनुच्छेद 361 तथा द्वितीय अनुसूची के पैरा 1 से लेकर पैरा 4 तक (जिसमें ये दोनों सम्मिलित हैं) के उपनक्षों पर प्रभाव नहीं डालेगी और न राष्ट्रपति को उस खंड के उपखंड (i) के अधीन उस सीमा तक जहां तक वह ठीक समझे उक्त राज्य के राज्यपाल के माध्यम से कार्य करने से निवारित करेगी ।

(v) संविधान में राज्य के विधान मंडल के या उसके द्वारा बनाए गए अधिनियमों या विधियों के प्रति किसी निदेश का ऐसे अर्थ लगाया जाएगा मानो वह उन अधिनियमों और विधियों को भी समाविष्ट करता है जो इस उद्घोषणा

के आधार पर संसद द्वारा या राष्ट्रपति या संविधान के अनुच्छेद 357 के खंड (1) के उपखंड (क) में निर्दिष्ट अन्य प्राधिकारी द्वारा राज्य के विधान मंडल की शक्तियों का प्रयोग करते हुए बनाए गए हैं और बम्बई सामान्य खंड अधिनियम, 1904 (1904 का बम्बई अधिनियम 1) जैसा कि वह महाराष्ट्र राज्य में प्रवृत्त है और सामान्य खंड अधिनियम, 1897 (1897 का 10) का उसका भाग जितना राज्य की विधियों पर लागू है ऐसे किसी अधिनियम या विधि के बारे में इस प्रकार प्रभावी होगा मानो यह उस राज्य के विधान मंडल का अधिनियम हो ।

नई दिल्ली ;
17 फरवरी, 1980

नीलम संजीव रेड्डी,
राष्ट्रपति

[संख्या V/11013/4/80-सीएसआर]

नई दिल्ली ;
17 फरवरी, 1980

टी० सी० ए० श्रीनिवासवरदन, सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

NOTIFICATION

New Delhi, the 17th February, 1980

G.S.R. 46(E).—The following Proclamation by the President is published for general information :

Whereas, I, Neelam Sanjiva Reddy, President of India, am satisfied that a situation has arisen in which the Government of Maharashtra cannot be carried on in accordance with the provisions of the Constitution of India (hereinafter referred to as "the Constitution") ;

Now, therefore, in exercise of the powers conferred by article 356 of the Constitution and of all other powers enabling me in that behalf, I hereby proclaim that I—

(a) assume to myself as President of India all functions of the Government of the said State and all powers vested in or exercisable by the Governor of that State ;

(b) declare that the powers of the Legislature of the said State shall be exercisable by or under the authority of Parliament ; and

(c) make the following incidental and consequential provisions which appear to me to be necessary or desirable for giving effect to the objects of this Proclamation, namely :—

(i) in the exercise of the functions and powers assumed to myself by virtue of clause (a) of this Proclamation as aforesaid, it shall be lawful for me as President of India to act to such extent as I think fit through the Governor of the said State ;

(ii) the operation of the following provisions of the Constitution in relation to that State is hereby suspended, namely :—

so much of the proviso to article 3 as relates to the reference by the President to the Legislature of the State ;

so much of clause (2) of article 151 as relates to the laying before the Legislature of the State of the report submitted to the Governor by the Comptroller and Auditor-General of India ;

articles 163 and 164 ;

so much of clause (3) of article 166 as relates to the allocation among the Ministers of the business of the Government of the State ;

article 167;

so much of clause (1) of article 169 as relates to the passing of a resolution by the Legislative Assembly of a State;

clause (1) and sub-clause (a) of clause (2) of article 174;

articles 175 to 178 (both inclusive);

clauses (b) and (c) of article 179 and the first proviso to that article;

articles 180, 181 and 182, clause (c) of article 183 and the proviso thereto;

article 185;

so much of article 186 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly;

so much of article 188 as relates to a member of the Legislative Assembly;

articles 189, 193 and 194;

so much of article 195 as relates to the salaries and allowances of Members of the Legislative Assembly;

articles 196 to 198 (both inclusive);

clauses (3) and (4) of article 199;

so much of clause (3) of article 202 as relates to the salaries and allowances of the Deputy Speaker of the Legislative Assembly;

articles 208 to 211 (both inclusive);

the proviso to clause (1) and the proviso to clause (3) of article 213; and

so much of clause (2) of article 323 as relates to the laying of the report with a memorandum before the Legislature of the State;

(iii) the Legislative Assembly of the said State is hereby dissolved;

(iv) any reference in the Constitution to the Governor shall in relation to the said State be construed as a reference to the President, and any reference therein to the Legislature of the State or the Houses thereof shall, in so far as it relates to the functions and powers thereof, be construed unless the context otherwise requires, as a reference to Parliament, and, in particular, references in article 213 to the Governor and to the Legislature of the State or the Houses thereof shall be construed as references to the President and to Parliament or to the Houses thereof respectively;

Provided that nothing herein shall affect the provisions of article 153; article 155 to 159 (both inclusive); article 299 and article 361 and paragraphs 1 to 4 (both inclusive) of the Second Schedule or prevent the President from acting under sub-clause (i) of this clause to such extent as he thinks fit through the Governor of the said State;

(v) any reference in the Constitution to Acts or laws of or made by the Legislature of the State shall be construed as including a reference to Acts or laws made, in exercise of the powers of the Legislature of the State, by Parliament by virtue of this Proclamation, or by the President or other authority referred to in sub-clause (a) of clause (1) of article 357 of the Constitution and the Bombay General Clauses Act, 1904 (Bombay Act 1 of 1904) as in force in the State of Maharashtra, and so much of the General Clauses Act, 1897 (10 of 1897), as applies to State laws, shall have

effect in relation to any such Act or law as if it were an Act of the Legislature of the State.

New Delhi;

The 17th February, 1980.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

[No. V/11013/4/80-CSR]

New Delhi;

T. C. A. SRINIVASAVARADAN, Secy.
the 17th February, 1980.

आदेश

नई दिल्ली, 17 फरवरी, 1980

सा० का० नि० 47(अ).—राष्ट्रपति द्वारा जारी किया गया निम्नलिखित आदेश सर्वसाधारण के सूचनार्थ प्रकाशित किया जा रहा है :

भारत के संविधान के अनुच्छेद 356 के अधीन मेरे द्वारा आज फरवरी, 1980 के 17वें दिन जारी की गई उद्घोषणा के खंड (ग) के उपखंड (i) का अनुसरण करते हुए, मैं एतद्वारा निदेश देता हूँ कि महाराष्ट्र राज्य सरकार के सभी कृत्य और संविधान के अधीन या उस राज्य में प्रवृत्त किसी विधि के अधीन उस राज्य के राज्यपाल में निहित या उसके द्वारा प्रयोक्तव्य सभी शक्तियाँ, जिनको राष्ट्रपति ने उक्त उद्घोषणा के खंड (क) के आधार पर स्वयं संभाल लिया है, राष्ट्रपति के अधीक्षण, निवेशन और नियंत्रण के अध्वधीन रहते हुए, उक्त राज्य के राज्यपाल द्वारा भी प्रयोक्तव्य होंगी।

नई दिल्ली;

17 फरवरी, 1980

नीलम संजीव रेड्डी,
राष्ट्रपति

[संख्या V/11013/4/80-सीएसआर]

नई दिल्ली;

17 फरवरी, 1980

टी०सी०ए० श्रीनिवासवरदान, सचिव

ORDER

New Delhi, the 17th February, 1980

G.S.R. 47(E).—The following Order by the President is published for general information :

In pursuance of sub-clause (i) of clause (c) of the Proclamation issued on this the 17th day of February, 1980 by me under article 356 of the Constitution of India, I hereby direct that all the functions of the Government of the State of Maharashtra and all the powers vested in or exercisable by the Governor of that State under the Constitution or under any law in force in that State, which have been assumed by the President by virtue of clause (a) of the said Proclamation, shall, subject to the superintendence, direction and control of the President, be exercisable also by the Governor of the said State.

New Delhi;

The 17th February, 1980.

NEELAM SANJIVA REDDY,
President.

[No. V/11013/4/80-CSR]

New Delhi;

T. C. A. SRINIVASAVARADAN, Secy.
the 17th February, 1980.

